कलम से...

प्रवेशांक-
अक्टूबर, 2018

मासिक हिन्दी ई-पत्रिका

यात्रा संस्मरण
विश्व हिन्दी सम्मेलन 2018
मॉरिशस
डॉ ध्रुवेन्द्र भदौरिया

साक्षात्कार विशेष
चरणजीत चरण

संपादक

राधाकांत पाण्डेय

सम्पादकीय कार्यालय

Omaxe Arcade, Near
Pari Chowk,
Greater Noida,
Uttar Pradesh-201301

संचार प्रमुख
गौरव सिंह निकुम्भ

संपर्क सूत्र
8920530757

ई मेल
info@poetsofindia.com

वेबसाईट
www.poetsofindia.com

संचालन
Poets Of India

प्रिय मित्रों,

सादर नमस्कार, *कलम से* के ई संस्करण का प्रवेशांक आपको समर्पित करते हुए हमें हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। हम *कलम से* को मात्र एक पत्रिका नहीं मानते, बल्कि अपने भीतर के रचना संसार को बाहरी संसार से परिचित करवाने के सशक्त माध्यम के रूप में स्वीकारते हैं। साथ ही हमारा पूरा प्रयास यह है कि अधिकाधिक नवोदित रचनाकारों की रचनाएँ न केवल वरिष्ठ साहित्यकारों तक पहुंचे, बल्कि साहित्य जगत के शीर्षस्थ महानुभावों की साहित्यिक यात्रा, संस्मरण, साक्षात्कार आदि के रूप में नवांकुरों के लिए प्रेरणास्रोत बने। चूँकि यह प्रवेशांक है अतः हमने उन रचनाकारों की रचनाएँ आमंत्रित की हैं, जो पहले से ही हमसे जुड़े हुए थे। आगामी अंकों के लिए हम खुले तौर पे रचनाएँ आमंत्रित करेंगे और सम्पादकीय समूह द्वारा उनके चयन के बाद उन्हें प्रकाशित करेंगे। बतौर रचना कवितायें, गीत, ग़ज़ल, कथा, संस्मरण, यात्रा वृतांत आदि प्रेषित करने के लिए सबका स्वागत है। इसके अलावा हमारा विचार यह भी है कि नए रचनाकारों के लिए रचनाओं की विभिन्न विधाओं के विशेषज्ञों द्वारा रचनाओं के व्याकरण से संबंधित सामग्री भी प्रकाशित की जाये। हम आभारी हैं हमारे मार्गदर्शक मंडल के जिनके द्वारा इस पत्रिका के लिए हमारा उत्साहवर्धन किया गया और हमें सदा जिनका सानिध्य भी प्राप्त होता रहेगा। इस पत्रिका के संबंध में आपके विचार और सुझावों का स्वागत है साथ ही हमें विश्वास है की इस पत्रिका को और बेहतर बनाने के लिए हमें आपका सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

धन्यवाद !

पत्रिका में प्रकाशित रचनाकारों के विचार निजी हैं, इनसे संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।

हिंदी काव्य परम्परा के श्रेष्ठ रचनाकारों ने अपने उत्कृष्ट लेखन और प्रतिभा के बल पर हिंदी का झण्डा वैश्विक स्तर पर बुलंद किया है, यह हमारे लिए गौरव का विषय है। आज हम सभी का यह कर्तव्य है कि साहित्य सृजन का जो श्रेष्ठ, समृद्ध व गौरवशाली मानक हमारे पुरखों ने बनाया, हम उसका अनुसरण करें। इसमें कोई संदेह नहीं कि हमारे भारत वर्ष के कोने-कोने तक प्रतिभाओं का अपार भण्डार है, जिन्होंने अपनी प्रतिभा के बल पर वैश्विक स्तर में भारत का नाम गौरवान्वित किया है। साहित्य सृजन के क्षेत्र में भी अनेक ऐसी प्रतिभाएं देखने को मिल जाएंगी जिनकी मौलिक रचनाधर्मिता, कथ्य, श्रेष्ठ शिल्प और अभिनव प्रयोग पाठक व श्रोता समूह के मन को आनंदित व रोमांचित करने वाले होते हैं, कमी है तो बस उन्हें निखारने और सही मंच प्रदान करने की।

बेहतर अवसर के अभाव में अनेक प्रतिभाएं दम तोड़ देती हैं। Poets Of India का यह प्रयास ऐसी ही प्रतिभाओं को एक बेहतर मंच प्रदान करना है, ताकि प्रतिस्पर्धा और मंचीय जोड़तोड़ में विफल रहे प्रतिभाशाली युवाओं को वैश्विक स्तर पर एक बेहतर मंच प्रदान किया जा सके, ताकि मौलिक प्रतिभाओं के साथ न्याय किया जा सके... हम सभी रचनाकारों से विशेष आग्रह करते हैं कि वो अपनी रचनाओं को दिए गए ई-मेल के द्वारा निर्धारित समय तक भेज दें, ताकि हमारे संपादक मंडल द्वारा चयनित रचनाकारों की कविताएं *कलम से* में शामिल की जा सकें।

धन्यवाद्!
संपादक

मॉरीशस और भारतीय संस्कृति

यात्रा संस्मरण, विश्व हिन्दी सम्मेलन 2018

डा. ध्रुवेन्द्र भदौरिया

विश्व हिन्दी सम्मेलन में इस बार मॉरीशस की धरती को नमन करने का स्वर्णिम अवसर भारत सरकार के आमंत्रण के द्वारा मुझे मिला तो मैं बहुत रोमांच से भर गया था,बहुत उत्सुकता थी उस धरती पर जाकर भारतीय भाषा और संस्कृति के विविध रंगों से परिचय प्राप्त करने की। हम जब मॉरीशस के पोर्टलुइस हवाई अड्डे पर उतरे तो हमारी अगवानी में अंतरराष्ट्रीय संबंध परिषद् की सुश्री तुलसी जी और सुश्री वंदना जी गाड़ी सहित उपस्थित थीं,औपचारिकता के बाद हम लोग होटल हिल्टन के लिये चले तो मार्ग में गन्ने के खेत मिले,लगा जैसे भारत के ही किसी गांव से हम लोग गुजर रहे हैं, बस अन्तर था तो यह था कि सड़क चिकनी और बिना गड्ढे वाली थी,गन्दगी तो दूर-दूर तक नहीं थी। भारत के कश्मीर जैसे सुन्दर दृश्य भी दिखाई दे जाते थे,हमको बताया गया कि अंग्रेज़ कोलकाता,मद्रास और बम्बई से भारतीयों को मजदूरी के लिये यहाँ लाये थे,यह मजदूर बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश के मूल निवासी थे। यह सब यहां एग्रीमेंट(एग्रीमेंट को यह गरिमिट बोलते थे) पर लाए गये थे अतः गिरिमिटिया कहलाये। जब ये लोग यहां आए तो अपने साथ रामचरित मानस और हनुमान चालीसा के साथ भारत के लोकगीत और वहाँ की संस्कृति भी लाये और उसे उन्होंने बहुत सलीके से सहेजा। अंग्रेज अधिकारी इन प्रवासी मजदूरों पर बहुत अत्याचार करते थे,इनको सीसा लगे कोड़ो से पीटा जाता,शाम को जब यह लोग छिपकर पत्थरों के टीले की आड़ में हिन्दी की वर्ण माला बच्चों को सिखाते,उनको रामायण और महाभारत की कहानियां सुनाते तो इनको यातनाएं दी जातीं, अंग्रेजों के भय से यह गन्ने के खेतों में छिप जाते लेकिन अगली शाम फिर इकट्ठे हो जाते और बच्चों को राम कृष्ण की कहानी सुनाते, अपनी भाषा की वर्णमाला सिखाते 'रामा सुमति देहु-क ख ग घ

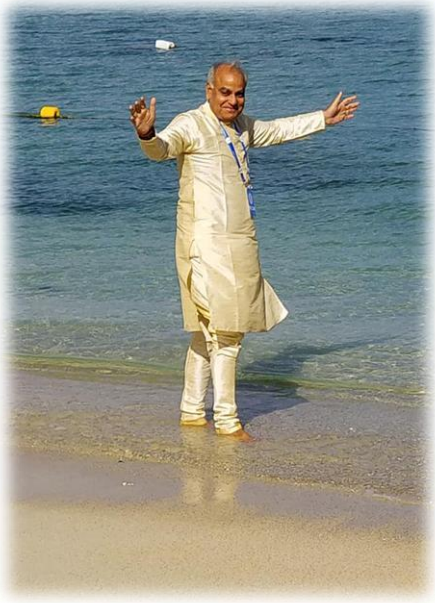

अंगा'। अमानवीय अत्याचार सहकर भी यह लोग अपनी भाषा अपनी संस्कृति अपने देवी देवताओं को भूले नहीं, इन्होंने अपनी आस्था के बल पर तालाब में गंगा को प्रकट कर लिया और गंगा तालाब का निर्माण किया। इन्होंने अपने परिश्रम से विश्व नक़्शे पर बिन्दु के समान छोटे से ३६ मील लंबे और २६ मील चौड़े नन्हे से टापू को स्वर्ग के समान सुन्दर बनाया। कहीं मंदिर,कहीं कथा मण्डप, और उनके परिसर में कहीं धानी, कहीं अंगूरी, कहीं फिरोजी सौंदर्य से सुसज्जित रंग छटाएं, चारों ओर गहरा नीला फेन उगलता चट्टानों से टकराता हाहाकार करता महासागर,और उनके सुन्दर तट ,सब इनके श्रम बिन्दु से स्नात हुए । मोहित करने वाले झरने और उनके उद्यान सब भारतीयों के खून पसीने के जीवन्त स्मारक बने। इन्होंने बहुत कष्ट उठाकर अपनी भाषा अपनी संस्कृति को बचाया, परिणामस्वरूप अब यहाँ हिन्दी भाषा और संस्कृति बहुत गहरी जड़ें जमा चुकी है, हिन्दी भाषी जनसंख्या बहुमत में है,डच और अंग्रेजी बोलने वाले भी हिंदी को मान देते हैं। यह यूं ही नहीं है कि मॉरीशस में भारतीय मूल के लोग ही पीढ़ियों से सत्ता संभाल रहे हैं, यह भी संयोगवश नहीं है कि विश्व हिंदी सम्मेलन में मॉरीशस के प्रधानमंत्री श्री प्रवीण कुमार जगन्नाथ बार बार अपने देश को पुत्र और भारत को पिता का संबोधन देकर सम्मानित करते हैं। मॉरीशस में भारत सरकार के सहयोग से हिन्दी सचिवालय स्थापित है जो हिन्दी को वैश्विक स्तर पर प्रचारित प्रसारित करता है। हिंदी संयुक्त राष्ट्रसंघ की भाषा बने इसके लिये भी सशक्त प्रयास किये जा रहे हैं। भारत के विदेश विभाग की अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक संबन्ध परिषद् की ओर से यहाँ लगने वाली संस्कृत की कक्षाओं में विद्यार्थियों की संख्या निरंतर बढ़ रहीं है। यहाँ पर ही आचार्या प्रतिष्ठा जी योग भी सिखाती हैं, इंदिरा गांधी सांस्कृतिक केन्द्र में संगीत और शास्त्रीय नृत्य भी सिखाया जाता है।

भाषा संस्कृति की संवाहक होती है,ग्यारहवां विश्व हिन्दी सम्मेलन इसी विचार पर केंद्रित रहा, भाषा के उन्नयन के लिए अनेक योजनाओं का उद्घोष हुआ है, देखना यह है कि क्रियान्वयन कितना होता है, किन्तु यह तो तय है हिन्दी का विकास रथ अब रुकने वाला नहीं है।

जय हिन्दी! जय हिन्द!!

भरत त्रिपाठी
ग्वालियर

मैं कौन हूँ

मेरे ख़ुदा तू मुझको अब ना टूटा फूटा ख़्वाब दे,
ग़र हो जो तेरे पास तो मुझे सीधा सादा जवाब दे,
मैं कौन हूँ ? मैं कौन हूँ ?

मैं जाने कौन रुआब में केवल ज़हर पीता रहा,
साँसे भी दम भरती रहीं मर-मर के मैं जीता रहा,
मेरे ज़ख्म जलते रहे औरो के ही सीता रहा,
इतनी भरी इंसानियत फिर भी तो मन रीता रहा।

होने को है पत्थर जुबां इसको नए अल्फ़ाज़ दे,
ग़र हो जो तेरे पास तो मुझे सीधा साधा जवाब दे,
मैं कौन हूँ ? मैं कौन हूँ ?

खोलो मेरे खाते सभी खुल के कहो क्या खो गया,
मुझको मिली क्यों ये सज़ा ऐसा क्या मुझसे हो गया?
दूजो को देकर के खुशी मैं ओढ़कर ग़म सो गया,
फिर क्यों मुझे आंसू मिले? क्यों हर कदम मैं रो गया?

जो मिल सके मुझको अगर तो ज़िन्दगी का हिसाब दे,
ग़र हो जो तेरे पास तो मुझे सीधा साधा जवाब दे,
मैं कौन हूँ ? मैं कौन हूँ ?

रिश्वत का बवाल

विजय चौबे
छपरा

एक बार यमलोक पुरी में मच गया एक बवाल,
धर्मराज ने कोर्ट में पूछा यम से एक सवाल
क्या यम तुमने रिश्वत ली है, इक मानव की रूह से?
यम जी बोले ‘‘क्या करता मेरे बच्चे मर गए भूख से’’।
काला भैंसा दे रक्खा है कभी न देते कार,
चारा लाऊं या के राशन बच्चे पड़े बीमार।
उस पर जुल्म की कोई छुट्टी ना कोई इतवार,
दया करो हम पर है धर्मा! हे मेरी सरकार !
बन अधिवक्ता नारद बोले ‘‘बात सही फरमाते हैं’’,
नारायण जपते वीणा के तार ये टूटे जाते है,
ले देते हैं नहीं नारायण मुझको एक गिटार,
महंगा लगे जो ये बाजा तो ले दें एक सितार,
लेता नहीं अभी तक रिश्वत करता मैं जयकार,
जबकि अब भी आज यहां रिश्वत का गर्म बाज़ार।
बिना हथेली गर्म किये ना लाशें फूंकी जाएं,
इतना हुआ करप्शन के खुद काला धन शर्माए।
सुनकर के दलील सभी की धर्मराज फरमाए,
यम जी को अब मिले कार भैंसा आज़ाद कराएं,
नारद जी से बोले धर्मा खूब करो जयकार,
दिल्ली के बाज़ार से ले देंगे हम तुम्हें गिटार।

बाबा की गुड़िया

रौनक पारिख
प्रतापगढ़

बाबा की गुड़िया थी मुझको नाम कमाना था,
में उड़ती चिड़िया थी मुझको गाते जाना था,
लाख उम्मीदें स्वप्न हज़ारों मन मे रमते थे,
मैं लड़की हूं, मुझको अपना अर्थ बताना था।

अम्मा थी बीमार, ना घर पर बाबा आये थे,
माँ से मिलने को भैया तुम घर पर आये थे,
बीमारी की चादर ओढ़े माँ तो सोई थी,
मैं अपने गुड्डे गुड़ियों के जग में खोई थी।

याद है तुमने प्यार से मुझको गोद बिठाया था,
इक चॉकलेट दे कर के मेरा मन ललचाया था,
मैं तो मेरे भोलेपन के रंग में डूबी थी,
तुमने अपनी पशुता का क्या खेल दिखाया था।

तुम तो घर के थे सो तुम पे शक क्या करना था,
जो करते थे मुझ संग बस सब खेल सा लगता था,
ओ भैया ! अस्मत हरते क्यों रूह नहीं काँपी?
इस गुनाह की है सारे जग में कोई नहीं माफी।

माँ बाबा, शैतान को तुम इंसान समझ बैठे,
गहरे भवरों को क्यों तुम पतवार समझ बैठे,
थे किये इशारे मैंने पर तुम जान नहीं पाए,
गली के कुत्ते को तुम मेहमान समझ बैठे।

अब किसी के लब पर मेरा नाम नहीं होता,
ताने सहना अपनों के आसान नहीं होता,
इन आँखों को बहने से आराम नहीं होता,
फिर जीवन जीना इतना आसान नहीं होता।

मुझको कुछ बनकर बाबा का मान बढ़ाना था,
जो रोशन करता घर को वो दीप जलाना था,
उम्मीदों के पंख लगा अम्बर तक जाना था,
मैं लड़की हूं मुझको अपना अर्थ बताना था।

जो प्राणों में स्पंदन भर दे गीत वो गाना था,
झरनों सा झरना नदियों सा बहते जाना था,
ज़ाहिल मेरा जीवन रस सब सोख लिया तुमने,
मैं लड़की हूं मुझको अपना अर्थ बताना था।

जीवन के घट से मुझको अमृत छलकाना था,
पीड़ा के पर्वत चढ़कर पहचान बनाना था,
ख्वाबों की धरती पर इक आकाश बनाना था,
मैं लड़की हूं मुझको अपना अर्थ बताना था।

के के राजस्थानी
धौलपुर

पुलिस और बेरोज़गार

एक पुलिसवाला मुझसे अकड़ कर बोला,
पकड़ गले को खींचा डंडे का मुँह खोला,
‘‘नगर की शाँति भंग करता है’’?
‘‘शरीफों को तंग करता है’’?
तड़ातड़ बरसात कर दी,
गालियों से जेब भर दी।
देते हुए गाली पर गाली,
सभी जेबों की तलाशी कर डाली।
मैंने कहा ‘‘माना कानून के रखवाले है आप,
पर ये बताइये, लुटेरे हम हैं या आप’’?
‘‘क्यों परेशान होते हो?
अपना कीमती समय खोते हो,
तुम्हारी आँखें नोटों की चमक से हरी हैं
पर हमारी जेबें नोटों से नहीं
समस्याओं से भरी हैं’’।
एक जेब में महंगाई, दूसरी में बेरोज़गारी,
तीसरी में गरीबी ने कोई कसर नहीं छोड़ी है,
समस्याओं ने कुछ इस तरह रुलाया है
चौथी में दहशत, पांचवी की जर्जर हालत ने,
भविष्य की कमर तोड़ी है।
पुलिस वाले ने माथा ठोका और खीज कर बोला,
‘‘लगता है तेरे साथ मेरी भी राशि पर
राहु-केतु शनि चल रहा है,
जिसे भी पकड़ता हूँ,
बेरोज़गार मिल रहा है।

संजय शाह
छपरा

किसान

जो सूरज उगने से पहले,घर से निकला करते हैं,
नंगे पावों तेज़ धूप में, बिन जूतों के चलते हैं,
सर्दी गर्मी बारिश में जो, अपना फर्ज़ निभाते हैं,
धरती का वो चीरें सीना, अन्न वहाँ उपजाते हैं,
जिनके दम से खेत खेत में ,लहराती सी बाली हो,
उस किसान के घर में बोलो, क्यूँ ऐसी बदहाली हो?

जा कर देखो उनके घर में, चूल्हे कैसे जलते हैं,
रोज़ टूटते उनके सपने, बच्चे कैसे पलते हैं,
बिटिया छोटी बात बड़ी क्यों करती अपने भाई से,
सो जा मुझको भूख नहीं है कहती अपनी माई से,
अन्न उगाने वाले की ही अपनी थाली खाली हो,
उस किसान के घर में बोलो, क्यूँ ऐसी बदहाली हो?

आँधी तूफानों का ख़तरा, बाढ़ भयंकर आती है,
क़भी तेज़ बारिश या ओले, फसल नष्ट हो जाती है,
सूखा जब-जब पड़ा खेत में, तन भी उसका सूखा है,
साहूकार का ब्याज चुके ना, पूरा घर ही भूखा है,
त्योहारों पर उनके मातम, सबकी ईद दिवाली हो,
उस किसान के घर में बोलो, क्यूँ ऐसी बदहाली हो?

बारिश में छत टप-टप टपके, नींद भला कैसे आये?
फसल देख आधी बस केवल, चेहरे सबके मुरझाये,
बेटे की अब रुकी पढ़ाई, फीस नहीं भर पाया है,
बिटिया की शादी हो कैसे, सोच-सोच घबराया है,
भूख ग़रीबी उसकी ख़ातिर, बन बैठी ज्यों गाली हो,
उस किसान के घर में बोलो, क्यूँ ऐसी बदहाली हो?

पेट भरे जो दुनिया भर का, भूखा ही सो जाता है,
कैसे कर्ज़ उतारे अपना, उसे समझ ना आता है,
पैरों में जूते ना चप्पल, काँटा-पत्थर चुभ जाए,
रोटी के ही जब लाले तो, दवा कहाँ से वो लाए,
पुत्र समझकर रात-रात भर, जिसने फसलें पाली हो,
उस किसान के घर में बोलो, क्यूँ ऐसी बदहाली हो?

आज हुआ उपवास बहाना, कल क्या मुँह में डालेंगे?
रोज़-रोज़ की चिंता है ये, कैसे बच्चे पालेंगे?
कष्ट बढ़ा इतना बच्चों की, मोह माया को भूल गया,
जिस रस्सी से झूला झूला, उस पर फाँसी झूल गया,
काँटे ही क्यों उसके हिस्से, जो बगिया का माली हो?
उस किसान के घर में बोलो, क्यूँ ऐसी बदहाली हो?

जय जवान औ' जय किसान, बस नारों में ना रह जाए,
सपने भी फसलों के जैसे, नहीं बाढ़ में बह जाए,
देव धरा ये हर किसान में, अन्न देवता वास करें,
कष्ट जरा ना हो किसान को, सरकारें प्रयास करें,
बीज स्नेह का खाद प्यार की, हर घर में हरियाली हो,
क़भी किसानों के ना घर में, फिर ऐसी बदहाली हो।

रवि सरोहा
रोहतक

हाँ मैं तिरंगा हूँ, हाँ मैं तिरंगा हूँ,
देश की खातिर जिये जो देश खातिर मर गये,
उन शहीदों के लहूँ से, मैं तो रंगा हूँ।

मैंने देखा है यहां पर सूनी मांगों का रुदन,
छोटे बच्चो के सरों से उठते देखा है गगन,
अस्थियाँ कितनी बही हैं मेरे पावन नीर में,
मैं ही जमना की लहर हूँ, मैं ही गँगा हूँ।

राजनीति ने हैं बदले, कैसे-कैसे रंग हैं,
लोग लड़ते जा रहे हैं, जाने कैसी जंग है,
मज़हबी होने लगे हैं, भूलकर सद्भावना,
अपनों के हाथों जला मैं, वो पतंगा हूं।

हैं भरे भंडार जिनके लोग ऐसे चंद हैं।
लाखों टन आनाज सड़ता बोरियों में बंद है,
तन पे कपड़े ना कहीं तो,भूख से मरता कहीं,
दर-बदर मैं ही भटकता, मैं ही नँगा हूँ।

साज़िशें होने लगी अब,लोग मरते जा रहे,
हर तरफ आतंक फैला,लोग डरते जा रहे,
जल न जाये देश पूरा,क्यूँ जले कश्मीर है?
मैं ही हिन्दू मैं मुसलमाँ, फिर क्यूँ दंगा हूँ?

नफरतों का दंश फैला,कौन अब बच पायेगा?
जिस तरह से मैं जला हूँ,तू भी सुन जल जायेगा,
अपनों से पीड़ा मिली तो,मन ये घायल हो गया,
कैसे कह दूँ ठीक हूँ मैं...? हाँ मैं चंगा हूँ।

नित नये प्रतिमान गढ़ता,विश्व पर मैं छा रहा,
राष्ट्र हित सर्वोपरी है...बात ये समझा रहा,
साथ मिलकर गीत गाओ,देश की तुम शान में,
मैं खुशी से झूमता हूँ...मैं मलंगा हूँ।

SMART DIGITAL MARKETING SCHOOL

EARN WHILE YOU LEARN !

DIGITAL MARKETING CERTIFICATION COURSE

- The most in demand course
- Job Assistance
- 24x7 on job Whatsapp Support
- Small batches
- Classes by award winner Industrial Experts & The Author of "The SEO Journal Book"

FREE DEMO

Call us:
0120-4127506
8178501199,
9643670817

E-mail us:
info@smartdmschool.com
Visit Website:
www.smartdmschool.com

दमदार बनारसी
बनारस

रमा, रज़िया, रिहाना या कि रुख़साना ज़रूरी है।
अगर हो प्यार तो कोई ग़ज़ल गाना ज़रूरी है।।१।।

मुहब्बत में मियाँ आँसू निकल आना ज़रूरी है।
बनारस में रहो तो पान भी खाना ज़रूरी है।।२।।

बुजुर्गों में कहीं कोई न तुमको बे अदब कह दे,
अदब का बोझ सर पे हो तो दब जाना ज़रूरी है।।३।।

चले आओ अगर हो शौक़ तुमको बादशाहत का,
बसे हैं हर तरफ़ अन्धे यहाँ काना ज़रूरी है।।४।।

बुढ़ापे में बहुत कुछ चाह कर भी कुछ नहीं होता,
जवानी में क़दम शायद बहक जाना ज़रूरी है।।५।।

अनुराग सागर
बनारस

दूर मेरी नज़र से वो क्या हो गई,
उम्रभर के लिए एक सज़ा हो गई ।।१।।

ख़त्म अब हो गया हिचकियों का सफ़र,
क्या हकीकत में वो बेवफ़ा हो गई ।।२।।

माँगता हूँ ख़ुदा से तुझे रात-दिन,
जैसे तू मेरी कोई दुआ हो गई ।।३।।

मैंने चाहत के मंदिर में पूजा उसे,
देखते-देखते वो खफा हो गई ।।४।।

एक दिन ख़ैरियत उसने क्या पूछ ली,
मेरे दर्द-ए-जिगर की दवा हो गई ।।५।।

सौंप दी ज़िन्दगी मैंने 'सागर' उसे,
मुझसे अनजाने में ये ख़ता हो गई ।।६।।

सूरज मणि त्रिपाठी
बनारस

१

भाव हर रात में नहीं आते,
चित्र अनुपात में नहीं आते,
दृश्य दिखलाऊँ वह तुम्हें कैसे,
मित्र बरसात में नहीं आते।

२

चाहते हो कि प्यार हो जाये,
दिल मेरा बेकरार हो जाये,
रोज घुट-घुट के क्यों मरें हम भी,
आज ही आर पार हो जायें।

३

होठ थरथराते हैं, सीटियां नहीं बजतीं,
कंगनों का क्या कहिए, चूड़ियां नहीं बजतीं,
दिल मेरा धड़कता है, कांपता है मोबाइल,
अब तुम्हारे नम्बर की, घण्टियाँ नहीं बजतीं।

४

मोहब्बत के लिए दिल का ज़रा विस्तार तो कर लो,
किसी की आंख में तुम झांक के अभिसार तो कर लो,
ये रिश्ते टूट जाते हैं उमर नादान होती है,
मिलेगा दर्द तुमको भी किसी से प्यार तो कर लो।

विनय विनम्र
डालटेनगंज

हम सौंप कर तुमको धरोहर जा रहे खोना नहीं,
हम देश पर मर कर अमरता पा रहे रोना नहीं।

वह बीज जो विष वृक्ष बनकर इस धरा पे छा गया,
जो मातृभूमि पर गुलामी वाला दाग लगा गया।
फिर से कभी जयचंद बनकर तुम उसे बोना नहीं,
हम देश पर मरकर अमरता पा रहे रोना नहीं।

बिस्मिल,सुभाष,भगत यहीं सुखदेव और आज़ाद है,
बलिदान की इस भूमि पर हर वीर ज़िंदाबाद है।
मजबूर या लाचार अब तुमको कभी होना नहीं,
हम देश पर मरकर अमरता पा रहे रोना नहीं।

जब स्वार्थ की जागीर पर सारा जहाँ कंगाल हो,
ग़म के अंधेरों में डूबा हर आदमी बदहाल हो।
तब गफ़लतों की नींद में उस वक्त तुम सोना नहीं,
हम देश पर मरकर अमरता पा रहे रोना नहीं।

तुम वीर बालक वीर माता की अटल संतान हो,
तुम पूर्वजों के स्वप्न माँ की गोद के अभिमान हो।
कभी बुजदिली का बोझ अपने शीश पर ढोना नहीं,
हम देश पर मरकर अमरता पा रहे रोना नहीं।

सुकांत तिवारी
रोहतक

माँ ! तेरे प्यार के आगे तो ये जहाँ खिलौना लगता है,
बस तेरी छाँव ही सब कुछ है,वो स्वर्ग भी बौना लगता है।
ये शान मेरी गाड़ी बँगले ये सब मिट्टी से लगते हैं,
माँ तेरी गोदी के आगे मख़मली दुशाले ठगते हैं।

घूमो दुनिया, ढूँढ़ो मिलकर सच्चा घर बार नहीं मिलता,
सब कुछ मिल जाता यहाँ मगर, माँ जैसा प्यार नहीं मिलता।

हम झूला झूला करते थे, माँ-पा के ऊँचे काँधों पर,
वो आँसू पड़े ही रहते थे, हरदम ही तो इन आँखों पर।
मस्ती से हरा भरा बचपन और बचपन की वो सब खुशियाँ,
अब याद बहुत आती माँ की गोदी वाली रतियाँ।
बचपन में हर दिन उत्सव था अब इक त्यौहार नहीं मिलता,
सब कुछ मिल जाता यहाँ मगर, माँ जैसा प्यार नहीं मिलता।

जब पढ़ते हैं रातों को हम, संग रात-रात भर जगती है,
चोटों पर छुअन ही माँ की मरहम से बेहतर लगती है।
लग जाता पता उसे सब कुछ, बचपन में हम बस रोते थे,
जब थक कर आते थे घर पर गोदी में उसकी सोते थे।

जो माँ की गोदी में मिलता, वैसा संसार नहीं मिलता,
सब कुछ मिल जाता यहाँ मगर, माँ जैसा प्यार नहीं मिलता।

इब्राहिम अल्वी
दिल्ली

मजबूरी

एक तरफ तुम हो, दूसरी तरफ माँ है,
तुम दोनों के बीच, मेरी अकेली जाँ है।

माँ बचपन का दुलार, तुम जवानी का प्यार,
मेरी स्थिती जैसे, नाव बीच मझधार।

माँ उम्र के ढलान पर, तुम यौवन के उफान पर,
एक पैर ज़मीन पर, दूसरा आसमान पर।

माना तुम्हारा साथ निभाना मेरा फर्ज़ है,
पर माँ का भी तो मुझ पर कर्ज़ है,
ज़रा समझा करो मेरी जाँ,
थोड़ा सब्र करने में क्या हर्ज़ है?

तुम्हारा जी भी बहलाउंगा मैं,
तुम्हारे नख़रे भी उठाउंगा मैं,
पर माफ करना प्राण प्रिये,
पहले माँ के पाँव दबाउंगा मैं।

सच मानो मेरा दिल, इतना सख्त नहीं,
पर माँ से भी तो रह सकता विरक्त नहीं,
तुम तो इन्तज़ार कर सकती हो,
किन्तु माँ के पास वक्त नहीं।

माँ को सहारा देना जरूरी है,
ये नहीं कि तुम से कोई दूरी है,
तुम्हारे पास भी आउंगा, ठहरो,
अभी तो थोड़ी सी मजबूरी है।

प्रमोद कमल
इलाहाबाद

धरना

आजकल धरना देना इतना आसान हो गया है कि जितना रेलवे में टिकेट भी नहीं। वहां तो कम से कम यूजर आइडी, पासवर्ड और फिर वो अंतिम में पूछता है कि आप रोबोट तो नहीं हैं? लेकिन हमारे देश में धरना देने के लिए ऐसी किसी भी तरह की क्वालिफिकेशन की ज़रुरत नहीं है, और हम लोग चार साल लगाकर इंजीनियरिंग करते हैं तब भी पता नहीं होता कि नौकरी लगेगी या नहीं लेकिन धरना आजकल डायरेक्ट प्लेसमेंट लेने का बहुत अच्छा तरीका बन गया है, केजरीवाल, कन्हैया, जिग्नेश मिवानी इसके साक्षात उदहारण हैं। तो मेरा भी मन किया की मैं भी धरना दूँ, लेकिन मेरे पास तो किसी चीज़ की कमी नहीं, तो यही सोचते हुए मेरे दिमाग में आया कि ठण्ड बहुत पड़ रही है, और कोहरा भी बहुत हो रहा है और सूरज के दर्शन हो नहीं रहे हैं, तो मैंने सोचा कि ये एक बहुत बड़ा सामाजिक मुद्दा है कि सर्दी के हर दिन सूरज दादा के दर्शन होने चाहिए।

अब मुझसे कुछ नहीं होता, मैं तो धरना देने जाऊँगा,
जमा कर लूँगा दो चार नाकारों को, और रातों रात स्टार बन जाऊँगा।
कुछ नहीं मिला तो सूरज को ही पकड़ लिया,
इस कड़कड़ाती ठण्ड का एक ज्वलंत मुद्दा बना लिया।
(तो मैंने धरना देने के लिए संसद भवन का रुख़ किया
कई लोगों ने पूछा कि क्यूँ बैठे हो)
मैंने भी कह दिया कि सूरज से मेरी लड़ाई है,
और आज उसी कि सुनवाई है।
१० पूछते तो ४ साथ बैठ ही जाते,
और बाकी के ६ अगले दिन आने का वायदा करते जाते।
जैसे तैसे कुछ इस तरह बढ़ी मेरी धरना सेना,
और सूरज के साथ इस लड़ाई से बढ़ रहा था सम्मान मेरा।
वही लोग बाहर समाज में मेरी और भी ज़्यादा इज्ज़त बढ़ा रहे थे,
और इस बेमतलब के धरने को और भी आग लगा रहे थे।
दो चार दिन बाद स्वास्थ्य मंत्री जी बाहर आये,
और हम सब में कम्बल बटवाये।
(कम्बल तो थे हम सभी के पास लड़ाई तो
सूरज से चल रही थी, विपक्ष भी हमारे साथ था)
विपक्ष वालों ने कहा हम आपकी मांगे पूरी करवाएंगे,
सूरज से सर्दी के हर एक दिन में दर्शन देने का कॉन्ट्रैक्ट लिखवायेंगे।

इधर न्यूज़ चैनल वालों को भी ब्रेकिंग न्यूज़ मिल रही थी,
और सूरज के साथ इस लड़ाई को खूब पब्लिसिटी भी मिल रही थी।
लोगों ने मेरा साथ देने के लिए बसों में
आग लगाना और चक्का जाम करना भी शुरू कर दिया,
न्यूज़ चैनल वालों को इसी बहाने और भी मसाला मिल गया।
(पर मैंने कहा)
मैं गांधी जी के पदचिन्हों पर चलने वाला हूँ,
और धरना सेना को अहिंसा का रास्ता दिखाने वाला हूँ,
पक्ष और विपक्ष में इस बेतुके धरने से खूब गहमागहमी चल रही थी,
और पुलिस भी मूकबधिर बनके सबको देख रही थी।
कुछ नेताओं और फ़िल्मी सितारों ने भड़काऊ भाषण भी दे दिए,
और मेरे इस बेमतलब के धरने को मतलब कि पब्लिसिटी भी दे गए।
अब मौसम में थोड़ी गर्मी भी बढ़ रही थी,
पक्ष और विपक्ष में समझौते कि राजनीति भी चल रही थी।
सारे धरनों कि तरह इस धरने का भी कोई नतीजा नहीं निकला,
मैं भी अपना बोरिया बिस्तर लेकर घर को चला।

स्व.श्री अटल बिहारी वाजपेयी को समर्पित

पल्लवी राघव झा
मुंबई

राजनीति में जीते तो कई हैं मगर,
जो दिलों को जीत जायें ऐसे आप नेता कविवर थे।
मौत के आगे तो ज़िन्दगी हारी है मग़र,
जिस मौत पर स्वयं यम रोए ऐसे आप नेता कविवर थे।

संगठन का सृजन तो कईयों ने किया है मगर,
जो वतन से बढ़ अन्य कुछ न सोचे, ऐसे आप नेता कविवर थे।
स्वयं को हिन्दू तो कहा है मगर,
जिसकी मौत पर हर मुसलमान रोए ऐसे आप नेता कविवर थे।

बम गोलों से दुश्मनों पर कइयों ने वार किया है मगर,
जो शब्दों से दुश्मनों को चित्त कर जायें,ऐसे आप नेता कविवर थे।
भाषणों से कितनों ने सपने तो दिखाए हैं मगर,
जो बिन कहे हमें परमाणु सम्पन्न बना गए,ऐसे आप नेता कविवर थे।

अपने दल के नेता को तो सब सुनते हैं मगर,
जहाँ विपक्षी तालियों की गड़गड़ाहट कर जायें, ऐसे आप नेता कविवर थे।
भारत माँ के लिए जिये,हर साँस भारत माँ को दिया,
जिसके लिए हर इक भारत वासी रोये,ऐसे आप नेता कविवर थे।

नविषा सहारण
हिसार

चाहत करती है कलम मेरी,
अक्षत धागों को तर करने की,
भुरभुरी शांत संवेदना,
हर अक्षर में घर करने की,
बांध कर नैतिकता के तारों से
मत को हिम्मत करने की,
सूखी स्याह स्याही में,
स्वाह चिंतन को सच करने की।

चाहत करती है कलम मेरी,
चिंगारी से अंजन करने की,
टूट-टूट कर या जोड़ कर,
स्वर व्यंजन रंजन करने की,
कीमत यूँ भी कम नहीं होती,
सौ टूटे टुकड़ों में सोने की,
खुद को रोशन कर, ना पड़े ज़रूरत,
यूँ ना दीये ज़मीन में बोने की।

क्या ही ज़रूरत है आखिर?
हर पल कंदित हो मरने की,
एक ख़्वाहिश हो उस पर ही,
आसों को अम्बर करने की,
लिख कर सारी दुविधाएं,
उलझन को पतझड़ करने की,
चाहत करती है कलम मेरी,
अब मन को बंजर करने की।

चिंतित चिंतन बिन चिंता के,
चुन चुन कर चीनी चरने की,
छोड़ मना रे! हँस हँस कर नियति
भ्रम भावों में भरने की,
ज़िद लगा, हठी हो जा, नाज़ भी कर,
नहीं ज़रूरत अभिव्यक्ति पे अनशन करने की,
चाहत करती है कलम मेरी,
कहीं मन का मंथन करने की।

सच छुपा कर सच बताने,
सच में बिम्बित होने की।
ईर्ष्या का ईंधन होने से,
ज्वाला तक इंगित होने की।
संभुल सम ही सम्बल होकर,
संभव पर संबित होने की।
चाहत करती है कलम मेरी,
सब लिख कर लंबित होने की।

कृष्णानंद तिवारी
दिल्ली

दोहे

अगर मान लो हार है, अगर ठान लो जीत।
सब कुछ निर्भर सोच पर,सुन मेरे मन मीत।।

करें नियंत्रण क्रोध पर, गिर सकती है साख।
बना बनाया हो सके, पल भर में ही राख।।

प्रायश्चित करना पड़े, हमको उम्र तमाम।
भूले से भी ना करें, ऐसा कोई काम।।

सही आदमी को सदा, सही दीजिए काम।
तभी मिलेगा आपको, मनचाहा परिणाम ।।

बुरे वक्त के वास्ते, रहें सदा तैयार।
पता नहीं कब वक्त की, पड़ जाए कब मार।।

समझौते से ही सदा, होते देखें काम।
बचे व्यर्थ टकराव से, मिले सुखद परिणाम।।

जितना सच उतना कहें, रखें सदा यह याद।
बड़ी बड़ाई ना करें, पछताए जो बाद।।

उचित बात करिए सदा, अनुचित से परहेज।
समझदार होना सही, बने अधिक मत तेज।।

बेशक कितने भी बुरे, हो जाए हालात।
आपा मत खोएं कभी, रहे सदा यह ज्ञात।।

गुस्से से होता सदा, खुद का ही नुकसान।
तोड़ रहे हैं क्रोध में, घर का ही सामान।।

नवीन सिंह
कोलकाता

अलविदा

मैं तुम्हारी याद को तकिया बनाकर,
आँख सपनों से भिगोना चाहता हूँ,
अलविदा कह दो मुझे ऐ दोस्त मेरे,
चैन की अब नींद सोना चाहता हूँ।

जिनकी ऊँगली को पकड़कर मैं चला था,
उनको काँधे पर उठाकर छोड़ आया,
साँझ वो ऐसी ढली की आज तक ना,
मेरे आंगन में कभी भी भोर आया।

अब अंधेरा बादलो का ओढ़कर मैं,
चाँद पर ही एक बिछौना चाहता हूँ,
अलविदा कह दो मुझे ऐ दोस्त मेरे,
चैन की अब नींद सोना चाहता हूँ।

रिश्ते नाते दोस्ती व प्यार के,
रंग अनगिन हैं यहाँ संसार में।
कर्ज़ जीवन का चुकाने के लिए,
बन खिलौना बिक गये बाज़ार में।

बस नदी की धार बनना चाहता हूँ,
मैं मकाँ से रेत होना चाहता हूँ।
अलविदा कह दो मुझे ऐ दोस्त मेरे,
चैन की अब नींद सोना चाहता हूँ।

चरणजीत चरण से आज न केवल कवि सम्मलेन जगत भली भाँती परिचित है, बल्कि हिंदी फिल्मों में भी बतौर गीतकार चरणजीत चरण की पहचान बनती जा रही है। १२ जून को गौतम बुद्ध नगर (उत्तर प्रदेश) के गाँव रन्हेरा में जन्मे चरणजीत चरण की प्रारंभिक शिक्षा गाँव के ही प्राइमरी स्कूल में हुई। उसके बाद गांव के ही इंटर कॉलेज में जूनियर तक की शिक्षा ग्रहण की फिर इंटर कॉलेज झाजर से हाई स्कूल पास करने के बाद फरीदाबाद में रहकर इंटरमीडिएट किया, फिर दिल्ली यूनिवर्सिटी से बीए, एनआरइसी कॉलेज, खुर्जा से एलएलबी तथा एमए किया तत्पश्चात हापुड़ से टीचर्स ट्रेनिंग के बाद फिलहाल उत्तर प्रदेश सरकार के शिक्षा विभाग में सेवारत हैं। कवि सम्मेलनों की अग्रिम पंक्ति के कवियों में शुमार चरणजीत चरण की दो पुस्तकें हसरतों के आईने (ग़ज़ल संग्रह) और सरगोशियाँ (ग़ज़ल संग्रह) प्रकाशित हो चुकीं हैं। देश के लगभग सभी प्रतिष्ठित मंचों से काव्यपाठ करने से साथ ही भारत सरकार के आईसीसीआर द्वारा इंग्लैण्ड के २० शहरों में आयोजित कवि सम्मेलनों में सहभागिता कर चुके हैं। काव्य क्षेत्र में अपने योगदान के लिए अनेक राष्ट्रिय और अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों से सम्मानित चरणजीत जी से हुई ख़ास बातचीत के कुछ अंश प्रस्तुत हैं–

आपका कविताओं की ओर रुझान कब हुआ ?

पहली बार पंजाब केसरी समाचार पत्र में कुछ शेर पढ़े तो लगा ऐसी तुकबंदी की जा सकती है, करी भी... लेकिन वो सिलसिला एक दो चलकर बन्द हो गया। फिर एक या डेढ़ साल के बाद एलएलबी में एडमिशन हो गया, वहां पर यूनिवर्सिटी लेवल की एक कविता प्रतियोगिता मेरठ में आयोजित हो रही थी, नोटिस बोर्ड पढ़ा तो फिर अचानक से लगा कि क्यों न एक कविता लिखी जाए। फिर दिए गए विषय अनुसार एक कविता लिखी करीब १५

विद्यार्थियों ने कविताएं सुनाई लेकिन काफी कुछ मशक्कत के बाद मेरा चयन हो गया। यूनिवर्सिटी लेवल पर जाने के लिए जहां लगभग २२ डिग्री कॉलेज के विद्यार्थियों ने अपना कविता पाठ किया, मैनें वहां प्रथम पुरस्कार जीता, लेकिन इस पुरस्कार का अधिकतम श्रेय मैं आज भी अपनी सम्मानीय अध्यापिका को देना चाहूंगा, जिनका मेरा कोई विषयक संबंध तो नहीं था, परंतु वो चूंकि उस पूरे कार्यक्रम की संयोजिका थीं और हिंदी की प्रोफेसर थीं कविता की ग्रामर पर उनकी अच्छी पकड़ थी, तो उन्होंने न सिर्फ मेरी कविता व्याकरणीय दृष्टि से सही कराई बल्कि कविता के प्रस्तुतिकरण का भी अभ्यास कराया और परिणाम स्वरूप मुझे एक बार नहीं बल्कि एक महीने के बीच में लगातार तीन बार प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। इसके बाद मुझे लगने लगा कि मैं कविता लिख सकता हूँ और मंच पर पढ़ भी सकता हूँ।

आपकी रचनाओं का मूल भाव क्या होता है ?

शुरुआत में जब कविता लिखनी शुरू की तो उस वक्त विषय सामाजिक सरोकार था, बाद में थोड़ा बहुत राजनीति पर लिखना शुरू किया, उसके बाद श्रृंगार, पारिवारिक संवेदनाएं आदि। आज कोई एक विषय या भाव निश्चित नहीं है मेरी कविताओं में, लगभग सभी विषय समाहित होते हैं। फिर भी प्रेम को मैं अपना मूल भाव मानता हूं।

फिल्मों में लेखन का सिलसिला कैसे शुरू हुआ ?

बात २००३-४ की है जब मेरे छोटे भाई (जो कि वायलन प्लेयर हैं) ने मेरी मुलाकात कविता सेठ (जो आज एक सूफी और पार्श्व गायिका के रूप में अपनी पहचान बना चुकी हैं।) से कराई। कविता जी को मेरा लेखन अच्छा लगा, उन्होंने कुछ विषय लिखने के लिए दिए मैनें उन पर लिखा उन्हें पसंद आया उस वक्त वो दिल्ली में ही रहती थी।

इसी बीच कविता जी मुम्बई शिफ्ट हो गयीं, लेकिन बात-चीत होती रही। मुम्बई पहुँच कर २००६ में उन्होंने मेरी मुलाकात तेज़ाब फिल्म के निर्देशक एन चंद्रा जी से कराई जो एक नई फिल्म बना रहे थे, जिसमें उन्हें कुछ अलग तरह का काम चाहिए था। उनसे कई मुलाकातों के बाद काम पूरा हुआ २००८ में फ़िल्म (ये मेरा

इंडिया) रिलीज हुई जिसमें मेरा एक गीत और ६-७ शेर अलग-अलग घटनाओं पर फिल्माए गए थे। यह एक बिल्कुल अलग तरह का प्रयोग था, जो फ़िल्म की असफलता के साथ धूमिल हो गया।
उसके बाद कविता जी ने ही २०११ में समीर टंडन जी से मुलाकात कराई और फ़िल्म 'माई फ्रेंड पिंटो' के लिए एक गीत लिखा। उसके बाद शमीर जी के लिए ही एक गीत फ़िल्म 'वेलकम टू न्यूयॉर्क' के लिए लिखा, जिसे राहत फतेह अली खान ने आवाज़ दी। यह मेरा अब तक का सबसे सफल गीत है जो इश्तेहार टाइटल से यूट्यूब पर मौजूद है।

अपने कवि सम्मेलनीय यात्रा के बारे में कुछ बताएं,क्या आप पिछले एक दशक से मंचो पर कुछ बदलाव महसूस करते हैं ?

कवि सम्मेलनिय यात्रा बहुत संघर्ष शील रही, करीब ७-८ वर्षों के लंबे संघर्ष के बाद २००६ में मुझे कवि के रूप में पहचान मिली, उसके पश्चात कुछ उतार चढ़ाव के साथ ये सिलसिला चल रहा है। मैं स्वयं भी अपनी यात्रा को लगभग १० वर्ष ही मानता हूं, जहां तक इन १० वर्षों के उतार चढ़ाव का सवाल है, तो मैं कह सकता हूँ कि सोशल मीडिया ने कवि सम्मेलन को अत्यधिक प्रभावित किया है। इधर-उधर से उठाई गई टिप्पणियां और चुटकुले रातों रात पूरे देश में पहुँच जाते हैं और कविता कहीं सिसकती रहती है। संचालक और कवियत्रियों के बीच अश्लील संवाद अति चिंता का विषय है, इसके परिणाम स्वरूप कवि सम्मेलन से पारिवारिक श्रोता गायब हो रहे हैं और कवि सम्मेलन महज़ मनोरंजन बनता जा रहा है। इस विषय पर नए पुराने सभी कवि और इस संस्थान से जुड़े अन्य लोगों

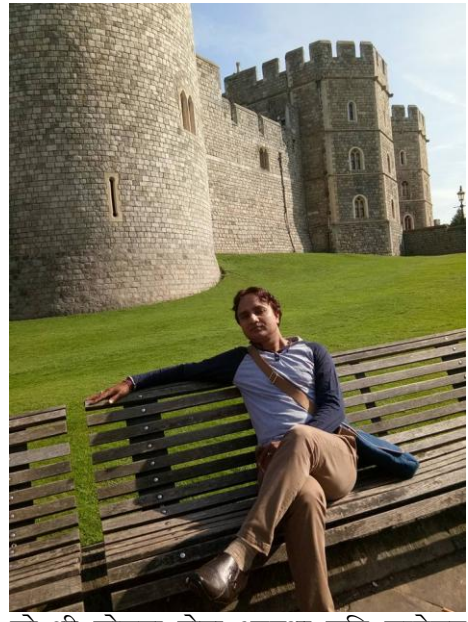

को भी सोचना होगा अन्यथा कवि सम्मेलन को एक बड़े नुकसान के लिए तैयार रहना होगा।

क्या कविता लिखने के लिए सीखना ज़रूरी है ? आपका क्या मानना है?

निश्चित ही, मैं चूंकि बहुत सलीके से कविता का व्याकरण सीख कर मंच पर आया हूँ तो मेरा मानना भी यही है कि मंच पर आने से पहले नए लोगों को कविता के व्याकरण पर ध्यान देना चाहिए। सिर्फ तुकबंदी को मैं कविता नहीं मानता, लेकिन हिंदी मंच का दुर्भाग्य यही है कि यहाँ लोग जुगाड़ से मंच पर चढ़ जाते हैं और कविता की गौरवशाली परंपरा को दूषित करते हैं। पिछले २० वर्षों में ऐसे लोगों की एक बड़ी जमात हिंदी मंच पर स्थापित हो गई है। उर्दू मंचों पर ऐसा नहीं है, वहां आज भी नया शायर अपना कलाम उस्ताद को दिखा कर ही मुशायरे में पढ़ने की कोशिश करता है, लेकिन हिंदी मंचों से यह परंपरा लगभग गायब हो चुकी है, उसी का परिणाम है कि आज हिंदी मंचो पर कविता कम, अभिनय अधिक होता है जो कवि सम्मेलन की सेहत के लिए अच्छा नहीं कहा जा सकता।

उभरते रचनाकारों को कोई सन्देश देना चाहेंगे?

बस इतना ही कहना चाहता हूं कि आप आएं अच्छे कन्टेन्ट के साथ, अच्छी सोच के साथ, क्योंकि कविता में आज भी विषयों की कमी नहीं है, ज़रूरी है कि आपका चिंतन गहरा होना चाहिए जितना ज़्यादा डूबोगे उतने ही ज़्यादा मोती प्राप्त होंगे, किनारे पर घूमते रहोगे तो खाली सीपियाँ मिलेंगीं। एक और ज़रूरी बात, कविता का व्याकरण सीखने की शुरुआत ज़रूर करें, अगर आप सच में अच्छा कवि बनना चाहते हैं तो।

POETS OF INDIA के विषय में क्या कहना चाहेंगे ?

मेरी दिली शुभकामनाएं हैं POETS OF INDIA को जो निरंतर कविता और कवि सम्मेलन की बेहतरी के लिए कार्य कर रहा है, और मैं उम्मीद करता हूँ कि इस संस्था के माध्यम से कुछ अच्छे रचनाकार कवि सम्मेलन को मिलेंगे। मैं एक बार पुनः POETS OF INDIA एवं इससे जुड़े सभी रचनाकारों को शुभकामनाएं देता हूँ बेहतर कल की।

DIGI ERA INFOTECH

Driving value in the Digital Era

Earn While U Learn

For

Students, Housewifes, Retired Persons & Professionals

Digital Marketing Course (DMC)

* Start earning 10-15k while doing the course
* Should have sound knowledge of English (writing skill)

Eligibility: Graduation & Basic Knowledge of Computer

Send resume to hr@digierainfotech.com

प्रीति सुमन
सीतामढ़ी

इश्क़ बेइंतहा और दिल बेज़ुबाँ,
कोई कैसे करे हाल दिल के बयाँ?
दिल में हलचल मची लब पे खामोशियां,
कोई कैसे करे हाल दिल के बयाँ?

चाहतें इस कदर उठ रही दिल में हैं,
मैं भी मुश्किल में हूँ, दिल भी मुश्किल में है
वो ना समझे है मगर दिल की मजबूरियां,
कोई कैसे करे हाल दिल के बयाँ?

कह के भी ना कहें, कह दे या चुप रहे,
इतनी बेचैनियाँ कोई कैसे सहे?
बस में धड़कन नहीं बढ़ती बेताबियाँ,
कोई कैसे करे हाल दिल के बयाँ?

खुशबुओं की तरह हो नहीं हो मगर,
सांसों में बस रहे आ रहे ना नज़र,
मुझ पे छाने लगी कैसी मदहोशियां,
कोई कैसे करे हाल दिल के बयाँ?

कलम से...

Head Office:
Omaxe Arcade, Near Pari Chowk, Gr. Noida, U.P.-201301.
Contact Us: 8920530757
E-mail: info@poetsofindia.com
Website: www.poetsofindia.com